समकालीन हिन्दी साहित्य

विविध विमर्श

संपादक : डॉ. महानंदा बी. पाटील
सह संपादक : डॉ. मीनाक्षी बी. पाटील

समकालीन हिन्दी साहित्य
विविध विमर्श

संपादक

डॉ. महानंदा पाटील

सह संपादक

डॉ. मीनाक्षी पाटील

आर. के. पब्लिकेशन

मुम्बई

ISBN : 978-93-91458-66-9

Copyright © Reserved

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 300/-

शीर्षक

समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध विमर्श

संपादक

डॉ. महानंदा पाटील

सह संपादक

डॉ. मीनाक्षी पाटील

प्रकाशक

आर.के. पब्लिकेशन

1/12, पारस दूबे सोसायटी,
ओवरी पाढ़ा, एस.वी.रोड,
दहिसर (पूर्व), मुम्बई - 400 068

Phone : 9022521190 / 9821251190
E-mail : publicationrk@gmail.com
Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : राजेन्द्र मिश्र
virar.mishra63@gmail.com

आवरण : सुनील निंबरे

मुद्रक : सुमन ग्राफिक्स, मुम्बई - 400011

Samkaaleen Hindi Sahitya : Vividh Vimarsh Edited By
Dr. Mahananda Patil & Dr. Meenaxi Patil

10. 'हम सब स्वार्थी हैं' उपन्यास में संघर्ष-समझौता
डॉ. बापुराव विट्ठल पाटील 61

11. आलोक शर्मा जी के 'इडला' उपन्यास में आदिवासी जीवन
डॉ. के. ए. पाटील 64

12. सेवासदन : स्त्री मुक्ति का भारतीय पाठ
डॉ. नीलम पांडेय 72

13. 'गबन' में तत्कालीन सामाजिक चेतना
सुशांत पात्रा 77

14. 'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास में नारी विमर्श
डॉ. गंगाधर मल्लाप्पागेंड 82

15. सूर्यबाला की कहानियों में अभिव्यक्त सामाजिक जीवन
डॉ. नारायण बगली 85

'पचपन खंभे लाल दीवार' उपन्यास में नारी विमर्श

– डॉ. गंगाधर मल्लाप्पा गेंड

'पचपन खंभे लाल दीवार' उपन्यास नारी विमर्श को लेकर रचा गया महत्वपूर्ण उपन्यास है। हालांकि नारी केंद्रित 'चित्रलेखा' जैसा उपन्यास काफी प्रसिद्ध हो चुका था। परंतु भगवती बाबू ने वहाँ समस्या नारी की नहीं, पाप-पुण्य की समस्या प्रस्तुत की है। यहाँ पर आजादी के बाद मुख्यतः नारी के अंतर्मन में झांक कर विवेचन-विश्लेषण किया है।

इसका पूरा कथानक सुषमा के इर्द-गिर्द घूमता है। नील भी जो कुछ है, सुषमा को लेकर है। इस कथानक में स्त्री की देह, उसका मन, उसका परिवार और सामाजिक रिश्तों सबमें लेखिका ने नारी की स्थिति पर प्रकाश डाला है।

विविध प्रसंगों में सुषमा के कार्य, उसकी गतिविधि, नारी का अंतर बाह्य केवल एक भोग्य वस्तु के रूप में ही नहीं है अपितु समाज का उसके प्रति दृष्टिकोण और उस पर नारी की संवेदनशील प्रतिक्रिया व्यक्त हुई है। सुषमा का बाहरी रंग, रूप, सौन्दर्य, अंग-यष्टि से अधिक प्रभावशाली उसका चिंतन, उसकी प्रतिक्रिया, उसका अंतर्द्वंद्व है। सुषमा चौराहे पर है। अतः विचलित है। यह उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर भारत में पढ़ी-लिखी कामकाजी महिला पर पड़े बंधनों पर प्रकाश डालता है।

नारी परिवार के प्रति समर्पित होकर अपना व्यक्तिगत सुख-दुःख भूल जाती है। जरा-सा सुख देखने किसी से मिल-जुल लेती है तो हजार आँखें उस पर चौकसी करती हैं। उसे बदनाम करती हैं, व्यंग्य करती हैं। यहाँ पर स्त्री ही स्त्री की सबसे बड़ी शत्रु बन जाती है। वह ईर्ष्या, द्वेष, जलन षड्यंत्र आदि क्या-क्या नहीं कर सकती। यहाँ तक कि सुषमा के लिए सामान्य जीवन जीना कठिन हो जाता है। नौकरी

करने में अड़चन आती है। आखिर उसे पीछे हटना पड़ता है। सारे अंर्तद्वंद्व, सारी पीड़ा और घुटन को समेटकर वह नील से पीछे हटती है या उसे धक्का देती है।

इस उपन्यास में परिवर्तन के दौर से गुजर रहे समाज में संघर्ष करती नारी की पीड़ा वर्णित हुई है। अंधविश्वास, रूढ़ियों और कुसंस्कारों से छूट रहे समाज में नारी के कदम किस प्रकार बढ़ते हैं, लड़खड़ाते हैं, वह टूटती है, परंतु कहीं झुकती नहीं। छोटे-मोटे लोभ में अपना अस्तित्व नीचे नहीं गिराती, संभलती है। अपना व्यक्तिगत स्वार्थ बलि कर फिर टिकी रहती है। यहीं उसका दृढ़ चरित्र सामने आ रहा है।

नारी अंर्तद्वंद्व इस उपन्यास का प्राण है। सुषमा केवल आदि, कल्पना और हवाई नारी नहीं है। वह भी हाड़-मांस की बनी औरत है। उसकी मानवीय इच्छा-आकांक्षा है। शारीरिक जरूरत है। चोट लगने पर पीड़ा होती है। प्रिंस आने पर या रेस्तरां में कॉफी पीते समय खुशी होती है। विविध भावों से पूर्ण वह एक संवेदना से भरी पूर्ण स्त्री है। आधी-अधूरी अथवा अतिरेक से भरी फूहड़ता कहीं नहीं। सुषमा ने इस नारी में अपने पद के प्रति मर्यादा भाव जीवित रखा है। परिवार के प्रति दायित्व रखा। समाज के व्यंग्य-विनोद के प्रति भी संवेदनापूर्ण व्यवहार रखा है।

सुषमा का जीवन बंद कमरे में घुट-घुटकर नहीं कटता। समस्याओं से लड़ती है। पढ़ाई कर प्राइवेट नौकरी कर रही है। परंतु अनैतिक आकांक्षा देखते ही वह नौकरी छोड़ देती है। नई जगह चली आती है। हॉस्टल वार्डन के रूप में पूरी ईमानदारी से कर्त्तव्य निभाती है। हास्टल में अनुशासन लाती है लेकिन नील के आने के बाद आया परिवर्तन उसकी अपनी उदासी दूर करता है। पर इसे सामाजिक स्वीकृति नहीं मिलती। अब जग कुतर्क देकर उसे अफवाहों के घेरे में डाल देते हैं। वह फिर एक बार बेदाग तन कर खड़ी हो जाती है। पूरी दृढ़ता से क्लास में पढ़ाती है। हास्टल से हटाने के सारे षड्यंत्र वह खत्म कर देती है।

यहाँ सुषमा का दृढ़ चरित्र और स्वभाव की स्पष्टता परिलक्षित होती है।

इस प्रकार नारी नये क्षेत्र में आकर जिन समस्याओं का सामना करती है, सुषमा जी ने खूब सूक्ष्मतापूर्वक उसका संवेदनपूर्ण चित्रण किया है। वास्तव में नारी के तन और मन दोनों का विश्लेषण और विवेचन इस उपन्यास की बड़ी विशेषता है। इसमें आदर्श और यथार्थ दोनों को सुषमा के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इसमें भारतीय नारी विमर्श की सुदृढ़ आधारशिला रखी गई है।

हिन्दी विभाग
एस.बी. कला एवं के.सी. पी. विज्ञान महाविद्यालय,
विजयपुर

❖❋❖